संपादकीय

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'प्रवाहिनी' का यह नवां अंक, नये तेवर और नये अंदाज़ में, आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए, हमें अत्यन्त प्रसन्नता है. वर्ष 1994 से निरंतर प्रकाशित होती इस पत्रिका ने समय के साथ अपने कलेवर बदले हैं, तथा समय-समय पर हिन्दी-भाषा के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, संस्कृति, स्वास्थ्य, खेल-कूद और मनोरंजन आदि से संबंधित लेखों के अविरल प्रवाह से मौलिक-चिंतन, वैज्ञानिक-सोच, लेखन क्षमता, साहित्य की सृजनशीलता एवं विषय की गुणवत्ता, बुद्धि-ज्ञान को सिंचित करने में योगदान किया है. इसे नई बुलंदियाँ दी हैं, और आज़ हमें गर्व है, कि संस्थान के निदेशक ने, स्व-प्रेरणा से, अद्यतन जलसमस्याओं से संबंधित सरकार की अवधारणा को इस हिन्दी पत्रिका के माध्यम से जनसामान्य तक पहुँचाने में योगदान किया है. उनका यह प्रयास राजभाषा हिन्दी को गरिमा प्रदान करने का एक महान ऐतिहासिक कदम है, तथा हमारे हिन्दी सृजन क्षमता का प्रेरणास्त्रोत.

यदि गहनता से विचार करें तो पायेंगे कि ज्ञान- विज्ञान, साहित्य और संस्कृति में चोली-दामन का संबंध है, इनके सहसंबंधों से उत्पन्न लेखनी का प्रवाह ही तो इस पत्रिका के नाम को सार्थक बनाता है.

प्रस्तुत अंक में जलसंसाधन, जलनीति, सूचना-प्रौद्योगिकी, यात्रा-प्रसंग, आयुर्विज्ञान, कविता, बच्चों की रचनाएं आदि के अतिरिक्त विगत वर्ष के पुरस्कृत प्रतियोगिता-लेख प्रमुखता से संकलित किए गए हैं. इसे तैयार करने में जिन प्रबुद्ध प्रतिष्ठ वैज्ञानिकों, विद्वानों तथा लेखकों ने अपने ज्ञान तथा अनुभव से परिचित करानें का प्रयास किया है, उनके प्रति हम हृदय से आभारी हैं. हम उन और समस्त के आभारी हैं, जिन्होंने अपने परिश्रम तथा प्रतिभा के प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष किसी भी प्रकार से इस पत्रिका के सफ़ल संपादन में योगदान किया है. हम निदेशक के भी अत्यन्त आभारी हैं, जिनकी सतत प्रेरणा एवं कुशल मार्गदर्शन ने इस पत्रिका का वर्तमान स्वरुप प्रदान किया.

हमें विश्वास है, कि यह अंक सुधी पाठकों को हमारी आशाओं के अनुरुप संतुष्टी प्रदान करेगा.

शुभकामनाओं के साथ,

(अशोक कुमार द्विवेदी)
वैज्ञानिक 'ब', हिन्दी अधिकारी
तथा मुख्य संपादक